THE DEPUTY CHAIRMAN: Half-an-hour discussion or one hour discussion or whatever it is. *(Interruptions)*

SHRI PRAGADA KOTAIAH: Madam, please allow me.

THE DEPUTY. CHAIRMAN: You write to the Chairman, Now, Question No. 2.

Bogus Claims of Insurance

*2. SHRI MOHAMMED AFZAL *ALLIAS* MEEM AFZAL: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether Government are aware that submission of bogus claims of insurance worth Rs. 1802 crores were allowed by Life Insurance Corporation of India in the year 1992-93;

(b) if so, what action has been taken by Government in this regard;

(c) what are the names of persons who were found involved in this act; and

(d) what steps have been taken by Government to prevent recurrence of such incidents in future?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (DR. ABRAR AHMED): (a) The Life Insurance Corporation of India have reported that they did not settle any bogus claim in the year 1992-93.

(b) to (d). Do not arise.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: मैडम, मंत्री जी ने बताया कि एल० आई० सी० ने 1802 करोड़ रुपए के बोगस क्लेम नहीं दिए है। ...(व्यवधान)...

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

†[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: मैडम, मंत्री जी ने बताया कि एल० आई० सी० ने 1802 करोड़ रुपए के बोगस क्लेम नहीं दिए हैं]

SHRI PRAGADA KOTAIAH: Madam, please allow me.I have been requesting you. You arc not permitting me to put my question

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Kotaiah, will you please sit down?

अफजल साहब, आप सवाल पूछिए।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: मैडम, मै मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि एल० आई० सी० ने अगर बोगस क्लेम नहीं दिए हैं तो क्या 1992-93 में एल० आई० सी० ने 1802 करोड़ रुपए का बोगस इन्श्योरेंस किया है? क्या उन्हें इसकी कोई जानकारी है? क्या उन्हें इसकी भी कोई जानकारी है कि 1991-92 के अंदर भी इस तरह के करोड़ों रुपए के बोगस इन्श्योरेंस किए गए हैं?

†[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: मैडम, मैं मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि एल० आई० सी० ने अगर बोगस क्लेम नहीं दिए हैं तो क्या 1992-93 में एल० आई० सी० ने 1802 करोड़ रुपए का बोगस इन्श्योरेंस किया है? क्या उन्हें इसकी कोई जानकारी है? क्या उन्हें इसकी भी कोई जानकारी है कि 1991-92 के अंदर भी इस तरह के करोड़ों रुपए के बोगस इन्श्योरेंस किए गए हैं]

डा० अबरार अहमद: मैडम, जहां तक मूल प्रश्न के अंदर माननीय सदस्य ने जीव बीमा निगम के द्वारा बीमे के 1802 करोड़ रुपए के मूल्य के फर्जी दावों के भुगतान की बात कही है, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को बताना चाहूंगा कि जीवन बीमा निगम में जो दावों का भुगतान किया जाता है, उसके मात्र दो ही तरीके हैं।

या तो पालिसी मैच्योर हो जाए, तब किया जाता है, या कोई कैजुयल्टी हो जाए, तब किया जाता है। तो फर्जी दावे का भुगतान होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

माननीय सदस्य ने फर्जी बिजनैस के बारे में बात कही कि- क्या 1991-92 में फर्जी इंश्योरेंस किया गया। तो मैं माननीय सदस्य को यह बताना चाहूंगा कि हमारे पास जीवन बीमा निगम द्वारा 1802 करोड़ रुपए का फर्जी इंश्योरेंस करने की कोई जानकारी नहीं है और इस प्रकार का कोई बीमा नहीं किया गया।

श्री मोहम्मद अफज़ल: उर्फ मीम अफज़ल: मैडम, यह बहुत अहम बात है।

†[श्री मोहम्मद अफ़ज़ल उर्फ़ मीम अफ़ज़ल: मैडम यह बहुत अहम बात है।]

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: क्या जानकारी प्राप्त करेंगे?

†[मौलाना उबैदुल्लाह खान आज़मी: क्या जानकारी प्राप्त करेंगे?]

श्री मोहम्मद अफज़ल उर्फ मीम अफज़ल: अभी हम बताते है कि जानकारी है इनको। मैडम, मंत्री जी कह रहे है कि यह जानकारी उनको नहीं है। मैं साबित करना चाहता हूं कि ऐसी जानकारी उनके पास है। राज्यसभा के मेंबर श्री समर मुखर्जी, जो अब रिटायर हो गए हैं, उन्होंने 26.6.93 को फाइनेंस मिनिस्टर साहब को एक खत लिखकर इसकी जानकारी दी है। श्री चतुरानन मिश्र जी, जो हमारे इस हाऊस के मेंबर है, उन्होंने 2.8.93 को इसकी जानकारी दी है और लोकसभा के मेंबर राजनारायण जी ने 13.5.93 को फाइनेंस मिनिस्टर को चिट्ठी लिखी है, प्राईम-मिनिस्टर को 25.6.93 को चिट्ठी लिखी है और अबरार साहब को 6.7.93 को चिट्ठी लिखी है। इसके अलावा उन्होंने स्टेट के गवर्नर को, चीफ मिनिस्टर को, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को, एल० आई० सी०, के जिम्मेदार अधिकारियों को 108 खत लिखे है और इंदौर में 148 करोड़ रुपए का घपला खुद एल० आई० सी० के लोगों ने एकड़ा है, झूठे इंश्योरेंस वहां पर किए गए थे।

मैडम, मैं बताता हूं आपको कि 1991-92 के अंदर एल० आई० सी० इंदौर को टारगेट दिया गया 500 करोड़ रुपए का इंश्योरेंस करने का और उसने 110 करोड़ रुपए के चैक झूठे नामों से जमा कराए मार्च के आखिर में टारगेट पूरा करने के लिए और तकरीबन 38 करोड़ रुपए के चैकों के अंदर गड़बड़ी पाई गई। यानी ठीक ढंग से बीमा नहीं किया गया और कुल 148 करोड़ का घपला हुआ।

पहले वाले डिवीजनल मैनेजर को टारगेट पूरा करने की खुशी में प्रमोशन दिया गया, उसका सम्मान किया गया। जब नया डिवीजनल मैनेजर आया और उसने इसकी जानकारी दी तो उसका ट्रांसफर कर दिया गया। मुझे मंत्री जी बताएं कि क्या उसकी जानकारी इनको नहीं है? अगर उसकी जानकारी इनको नहीं है तो मैडम, मैं एक और चीज आपके सामने पेश करता हूं कि कानपुर के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने यू० पी० के होम सेक्रेटरी को एक शिकायत भेजी और यू० पी० के होम सेक्रेटरी ने एंडीशनल डी० जी० पुलिस (फाइनेंशियल क्राईम ऐंड रिसर्च) को इंक्वायरी करने के आदेश दिए और उनका बयान अखबारों में छपा है कि इस सिलसिले में उनको 209 करोड़ रुपए की हेराफेरी की जानकारी मिली है।

मैं यह कहना चाहता हूं आपसे कि लोकसभा के एम० पी० ने 108 खत लिखे है, दो राज्यसभा के सदस्यों ने खत लिखे है और खुद अबरार जी को लिखे हैं और यह सारा मसला उठाया है एल० आई० सी० पालिसी होल्डर्स वैलफेयर आर्गनाईजेशन ने। मैडम, मैं यह जानना चाहता हूं कि जिसकी जानकारी पूरे हिंदुस्तान को है, उसकी जानकारी फाइनेंस मिनिस्ट्री को क्यों नहीं है? यह 1802 करोड़ रुपए का घपला है और मेरा दावा है कि 1993-94 और 1994-95 के अंदर यह घपला 5000 करोड़ रुपए तक पहुंचने वाला है। क्या मंत्री जी मुझे इस बात का एश्योरेंस देंगे कि वह इस सारे मामले की जांच कराएंगे और एल० आई० सी० पालिसी होल्डर्स वैलफेयर आर्गनाइजेशन ने जो मैमोरेंडम उनको भेजे हैं, जो रिप्रैजेंटेशन भेजे है, इनकी पूरी जांच करके आप पार्लियामेंट के फ्लोर पर रखेंगे और इसकी जानकारी आपको है या नहीं?

†[श्री मोहम्मद अफ़ज़ल उर्फ़ मीम अफ़ज़ल: अभी हम बताते हैं कि जानकारी है इनको- मैडम मंत्री जी कह रहे हैं कि यह जानकारी इनको नहीं है- मैं साबित करना चाहता हूं कि ऐसी जानकारी उनके पास है। राज्यसभा के मेंबर श्री समर मुखर्जी जो अब रिटायर हो गए हैं, उन्होंने 26.6.93 को फाइनेंस मिनिस्टर साहब को एक खत लिखकर इसकी जानकारी दी है।]

†[Transliteration in Arabic Script.

اسکی جانکاری انکو نہیں ہے تو میڈم میں ایک اور چیز آپکے سامنے پیش کرتا ہوں کہ کانپور کے ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ نے یو۔پی کے ہوم سیکریٹری کو ایک شکایت بھیجی اور یو۔پی۔ کے ہوم سکریٹری نے ایڈیشنل ڈی۔جی۔پولیس "فائیننشیل کرائم اینڈ ریسرچ" کو انکوائری کرنے کیلئے آدیش دیئے اور انکا بیان اخباروں میں چھپا ہے کہ اس سلسلہ میں انکو ۲۰۹ کروڑ روپئے کی ھیرا پھیری کی جانکاری ملی ہے۔

میں یہ کہنا چاہتا ہوں آپ سے کہ ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ کانپور نے ۱۰۸ خط لکھے ہیں دو راجیہ سبھا کے ممبروں نے خط لکھے ہیں اور خود ابراری جی نے لکھے ہیں۔ اور یہ سارا مسئلہ اٹھایا ہے۔ ایل۔آئی۔سی۔ پالیسی ہولڈرس ویلفیر آرگنائزیشن نے۔ میڈم۔ میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ جسکی جانکاری پورے ہندوستان کو ہے۔ اسکی جانکاری فائیننس منسٹری کو کیوں نہیں ہے یہ ۱۸۰۲ کروڑ روپئے کا گھپلا ہے اور میرا دعوا ہے کہ ۹۲-۱۹۹۳ اور ۹۵-۱۹۹۴ کے اندر یہ گھپلا ۵۰۰۰ کروڑ تک پہونچنے والا ہے۔ کیا منتری جی مجھے اس بات کا اشورنس دینگے کہ وہ اس سارے معاملے کی جانچ کرینگے۔ اور ایل۔آئی۔سی۔ پالیسی ہولڈرس ویلفیر آرگنائزیشن نے جو میمورنڈم چیئرمین مشرا جی جو ہمارے اس ہاؤس کے ممبر ہیں انہوں نے ۲۸-۹-۹۳ کو اسکی جانکاری دی ہے۔ ایڈیشنل سیکریٹری کے ممبر راج نارائن جی نے ۱۲-۹۳ کو فائیننس منسٹر کو چٹھی لکھی ہے پرائم منسٹر کو ۲۵-۶-۹۳ کو چٹھی لکھی ہے۔ اور ابراری صاحب کو ۶-۷-۹۳ کو چٹھی لکھی ہے۔ اسکے علاوہ انھوں نے اسٹیٹ گورنر کو۔ چیف منسٹر کو۔ ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ کو۔ ایل۔آئی۔سی کے ذمہ دار ادھیکاریوں کو۔ ۱۰۸ خط لکھے ہیں۔ اور اندور میں ۱۲۸ کروڑ روپئے کا گھپلا خود ایل۔آئی۔سی کے لوگوں نے پکڑا ہے۔ چھوٹے انشورنس وہاں پر کئے گئے تھے۔

میڈم میں بتاتا ہوں آپکو کہ ۹۲-۱۹۹۱ کے اندر ایل۔آئی۔سی۔ اندور کو ٹارگیٹ دیا گیا ۵۰۰ کروڑ روپئے کا انشورنس کرنے کا اور اس نے ۱۱۰ کروڑ روپئے کے چیک جعلی ناموں سے جمع کرائے مارچ کے آخر میں ٹارگیٹ پورا کرنے کیلئے اور تقریباً ۲۸ کروڑ روپئے کے چیکوں کے اندر گڑبڑی پائی گئی۔ یعنی ٹھیک ڈھنگ سے بیمہ نہیں کیا گیا اور کل ۱۸۸ کروڑ روپئے کا گھپلا ہوا۔

پہلے والے ڈویزنل منیجر کو ٹارگیٹ پورا کرنے کی خوشی میں پرموشن دیا گیا۔ اسکا سمان کیا گیا۔ جب نیا ڈویزنل منیجر آیا اور اسنے اسکی جانکاری دی تو اسکا ٹرانسفر کر دیا گیا۔ مجھے منتری جی بتائیں یا انکو نہیں ہے۔ اگر

† [ ] Transliteration in Arabic Script

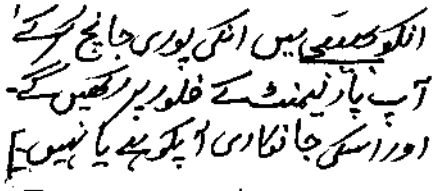

डा॰ अबरार अहमद: मैं इस बात को दोबारा दोहरा रहा हूं कि 1802 करोड रुपये के जिस घपले की बात माननीय सदस्य बार-बार कर रहे हैं, वह 1802 करोड़ रुपये का घपला नहीं है। फर्जी इंश्योरेंसे में ...(व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: कितने का है?...(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: This is not the way. Let him answer, please. I allowed the Member to ask the question and I allow the Minister to reply.

श्री बीरेन जे॰ शाह: कोई जानकारी नहीं है...(व्यवधान)

डा॰ अबरार अहमद: आप अगर सुनना चाहते हैं तो सुन लीजिए.....(व्यवधान)

उपसभापति: आप सुनिए।.....(व्यवधान)

डा॰ अबरार अहमद: दूसरी बात जो माननीय सदस्य ने पत्र लिखने के बारे में कही, तो कोई भी सदस्य पत्र लिखे, उसका मतलब यह नही है कि उस पत्र के माध्यम से या पत्र की वजह से यहां जो भी आरोप या प्रत्यारोप लगाया जाए, उस घपले को मैं स्वीकार कर लूं। रहा सवाल इंदौर का, तो जो स्पेसिफिक मामला माननीय सदस्य ने कहा, महोदया, मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि इंदौर के अंदर 1992 का जो माननीय सदस्य ने जिक्र किया, उस टाईम वहां जिस डिविजनल मैनेजर को माननीय सदस्य ने जो प्रमोशन की बात या उसको सम्मानित करने की बात कही है, वहां श्री जगमोहन सेठ डिविजनल मैनेजर थे। उनको न कोई प्रमोशन दिया है और न किसी प्रकार से सम्मानित किया है। यह सही है कि उन्होंने 508.47 करोड़ रुपये का इंश्योरेंस किया था और जो उनके बाद डिविजनल मैनेजर मि॰ स्वामीचरण आए, उन्होंने उससे काफी कम 390.36 करोड़ रुपये का इंश्योरेंस किया और उन्होंने इस बात को पोइंट आउट किया था कि यह जो इंश्योरेंस उन्होंने जितनी राशि का किया है वह सही नहीं है। तो चेयरमेन को विभागीय स्तर पर उसकी जांच करने के लिये कहा है और उसके अंदर जांच में जो भी आएगा, माननीय सदस्य को निश्चित रूप से उस इंदौर के मसले के बारे में जानकारी दी जाएगी।

SHRI VIREN J. SHAH: Madam, there is a question of propriety of the House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him answer.

SHRI VIREN J. SHAH: When a Minister states that there is no information about...

DR. ABRAR AHMED: Regarding Rs. 1,802 crores there is a specific question.. .*(Interruptions).*

THE DEPUTY CHAIRMAN: He is answering. First let him finish. I won't permit you.

SHRI V1REN J. SHAH: When Member says specifically, it is a question of propriety....

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will allow it only after he finishes. I will not allow it till he finishes his answer.. *(Interruptions)....*

DR. ABRAR AHMED: I have no information about Rs. 1,802 crores. I again and again repeat the same sentence. You should understand what I am saying *(interruptions).* That means you do not know about the question..... *(Interruptions)..*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute. Will you please sit down? Abrar Saheb, please sit down. Just a miunute. I heard the answer, if you did not hear it. What Dr. Abrar Ahmed told in the answer to the question of the hon. Member was that he received the letter—he hasn't denied receiving the letter—and on that basis he had made inquiries. Now please let me hear what inquiries he had done. Please do not interrupt.

श्री बीरेन जे॰ शाह: हमें जानकारी नही है। ...(व्यवधान)

उपसभापति: आप बैठिए।....(व्यवधान)

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: Madam, I need your protection. ..*(Interruptions)..*

डा॰ अबरार अहमद: मैडम्, मैंने बहुत कैटेगिरकली कहा कि 1802 करोड़ रुपये का जो एमाउंट यहा उन्होंने लिखा है, उस 1802 करोड रुपये के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

Again and again I want to repeat the same sentence. You should listen to this. Have you read the question? The original question is:

"क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि वर्ष 1992-93 में भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा बीमे के 1802 करोड़ रुपये मूल्य के फर्जी दावों का भुगतान किया गया है।" ...(व्यवधान)..

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please. 1 won't permit this,

DR. ABRAR AHMED: This is regarding claims, and there is no claim given. This is the original question. To what he has asked in the supplementary, I have given the reply.S . /

श्री एस० एस० अहलुवालिया: मैडम्, यह दो अफसरों का झगड़ा है।...(व्यवधान)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: मैडम्, आई वानट योर प्रोटक्सन। मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया है। मैंने सिर्फ इतनी जानकार हासिल करने की कोशिश की कि एक मेंबर पार्लियामेंट ने उनको खत लिखे हैं और उनको ही नहीं लिखे प्राइम मिनिस्टर को यहां से लैटर मार्क होकर के वहां गया है। अगर इनको जानकारी है तो सिर्फ मुझको इतना बता दें कि उसकी इंक्वायरी की गई? अभी मंत्री जी ने कहा कि इंदौर के अंदर बोगस इंश्योरेंस को इन्होंने मान लिया। मैडम्, खुद कहा कि 390 के सही थे, बाकी गलत हो सकता है फिगर्स में उपर नीचे हों, लेकिन यह तो आपने साबित कर दिया खुद फ्लोर पर कि बोगस इंश्योरेंस किया जा रहा है। बोगस इंश्योरेंस के नतायज क्या निकलते हैं? जो इंश्योरेंस करने वाले हैं । इन लोगों ने करोड़ों रुपये की हेराफेरी करके इंश्योरेंस करने वाले जो हैं उन को बोनस देने से ऐक्चुअली इंकार किया है, यह बहुत बड़ा फ्राड है। मैं जानना चाहता हूं कि अगर उन्होंने इंदौर में सही पाया तो जो इंश्योरेंस पालिसी होल्डर्स ऐसोसियेशन ने तीन एम०पीज० के जरिये यह शिकायत भेजी है और आज मैं हाउस के अंदर पूछ रहा हूं तो इस सारे मामले की जांच करेंगे? मैं तो आप से यह भी कहता हूं कि अगर यह झूठी पाई जाए तो आप एल०आई०सी० पालिसी होल्डर्स वेलफेयरऐसोसियेशन के खिलाफ कोई कार्यवाही करेंगे ऐवाम को मिसगाइड करने के लिए? आप दोनों में से एक बात की ऐश्योरेंस दीजिये।

†[सय्यद मुहम्मद अफजल उर्फ मीम-अफजल: "जारी" बोगस इंशोरेंस के नतायज क्या निकलते हैं- जो इंशोरेंस करने वाले हैं- उन को बोनस नहीं दिया जाता है- उन

† [] Transliteration in Arabic Script.

लोगों ने करोड़ों रुपये की हेरा फेरी करके इंशोरेंस करने वाले जो हैं उन को बोनस देने से ऐक्चुअली इंकार किया है- यह बहुत बड़ा फ्राड है- मैं जानना चाहता हूं कि अगर उन्होंने इंदौर में सही पाया तो जो इंशोरेंस पालिसी होल्डर्स ऐसोसियेशन ने तीन एम०पीज० के जरिये यह शिकायत भेजी है और आज मैं हाउस के अंदर पूछ रहा हूं तो इस सारे मामले की जांच करेंगे- मैं तो आप से यह भी कहता हूं कि अगर यह झूठी पाई जाए तो आप एल०आई०सी० पालिसी होल्डर्स वेलफेयरऐसोसियेशन के खिलाफ कोई कार्यवाही करेंगे ऐवाम को मिसगाइड करने के लिए आप दोनों में से एक बात की ऐश्योरेंस दीजिये।]

डा० अबरार अहमद: आनरेबल सदस्य सदस्यों से जो भी शिकायतें आती हैं, उनकी जांच की जाती है, ऐसा नहीं है कि उन लैटर्स को वैसे ही फाइल कर दिया जाता है। चूंकि माननीय सदस्य ने स्पैसीफिक इंदौर के बारे में पूछा था, तो उन के बारे में मैंने उन को स्पष्ट बताया कि कौन अधिकारी वहां थे जिन का प्रमोशन करने या सम्मानित करने के बारे में मैंने यह कि उन को प्रमोशन या सम्मानित नहीं किया गया है और उन के बाद आने वाले अफसर ने कम इंश्योरेंस किया, वह पर्सेन्टेज भी मैं ने बताया कि कम इंश्योरेंस की पीछे उन्होंने जो कारण दिये ...(व्यवधान)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: यह तो बताइए यह जो घपला पकड़ा उसके बारे में बताइए...(व्यवधान)

†[सय्यद मुहम्मद अफजल उर्फ मीम-अफजल: यह तो बताइये- यह जो घपला पकड़ा उसके बारे में बताइये...(व्यवधान)]

उपसभापति: अफजल साहब-जवाब तो देने दीजिये। Afzal Saheb- this is not the way

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: ये एक अफसर के बारे में बता रहे हैं, दूसरे के बारे में नहीं बता रहे हैं।

†[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ एम. अफजल: यह एक अफसर के बारे में बता रहे हैं, दूसरे के बारे में नहीं बता रहे हैं।]

उपसभापति: नहीं, आप बैठ जाइये। यह कोई तरीका नहीं है कि आप खड़े हो जाएं। I won't permit this.

डा० अबरार अहमद: बिना इंक्वायरी के उनको घपला कह देना यह वास्तव में क्या है? उसे कैसे कहा जा सकता है? माननीय सदस्य को मैंने क्लियरकट ऐश्योरेंस दिया है कि मामले की जांच की जा रही है और जो जानकारी होगी माननीय सदस्य को भेज दी जाएगी।

श्री मोहम्मद अफ़ज़ल उर्फ मीम अफ़ज़ल: जिस अफसर ने घपला पकड़ा उसके बारे में तो बोलिए, उसका क्या किया?...

†[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ एम. अफजल: जिस अफसर ने घपला पकड़ा उसके बारे में तो बोलिए, उसका क्या किया?]

उपसभापति: बस हो गया, बैठ जाइए। मिस्टर कटारिया।

श्री वीरेन्द्र कटारिया: मैडम डिप्टी चैयरमैन, मंत्री साहब ने अपने जबाव में कहा है कि इस किस्म की बातों को रोकने के लिए मल्होत्रा कमेटी ने जो रिपोर्ट दी है उस पर गौर करके कार्रवाई की जाएगी। मल्होत्रा कमेटी ने जो रिपोर्ट दी है उस में उन्होंने तजवीज़ किया है कि जी०आई०सी० और एल०आई०सी० को 50 परसेंट प्राइवेटाइज कर दिया जाए और इस सैक्टर को प्राइवेट सेक्टर के लिए खोल दिया जाए। मैं आपकी खिदमत में यह कहना चाहता हूं कि जब इंश्योरेंस इंडस्ट्री प्राइवेट थी उस वक्त बोगस क्लेम बेइंतिहा होते थे। उस वक्त कमीशन गवर्नमेंट ने जो मुकर्रर किया था उससे 10 गुना कमीशन दिया जाता था, बोगस एजेंसीज़ कायम की जाती थीं और क्लेम का रेशियो इतना होता था कि इस की वजह से सरकार को जनरल इंश्योरेंस को भी और लाइफ इंश्योरेंस को भी नेशनलाइज करना पड़ा। मैं मंत्री साहब से जानना चाहता हूं कि जब प्राइवेट इंडस्ट्री थी तो बोगस बातों को, करप्ट प्रेक्टिसेज को रोकने के लिए इनको नेशनलाइज किया गया अब मल्होत्रा कमेटी ने इसको डिनेशनलाइज करने के लिए कहा है। जब नेशनलाइज थी तब उसके ऊपर ऐतराज़ किया जा रहा था कि उसमें करप्शन बेईंतिहा है, जब नेशनलाइज नहीं थी तब इसको नेशनलाइज भी इसीलिए किया गया कि इसके अंदर बेइंतिहा करप्शन है। मैं वजीर साहब से जानना चाहता हूं कि मल्होत्रा कमेटी की जो रिपोर्ट हैं उसके मुताल्लिक गवर्नमेंट का क्या रियेक्शन है?

डा० अबरार अहमद: मैडम, मैंने अपने पहले के उत्तर में मल्होत्रा कमेटी का ज़िक्र नहीं किया था और माननीय सदस्य ने जो मल्होत्रा कमेटी के बारे में जानना चाहा तो वह रिपोर्ट सरकार के विचाराधीन है।

श्री वीरेन्द्र कटारिया: यह जो रिटन, लिखकर नोट आया है उसके ऊपर लिखा हुआ है कि मल्होत्रा कमेटी की रिपोर्ट पर गौर किया जाएगा। यह नोट मेरे हाथ में है।

SHRI JAGESH DESAI: Madam, I am not asking about the bogus claims, but I would like to ask this. In the month of March every year, policies are taken only for the purpose of showing more business.

SHRI S. S. AHLUWALIA: As window dressing.

SHRI JAGESH DESAI: Yes, window dressing. I would also say that the agent is a *crorepati* because his business has gone up and he gets some advantages out of it. The Divisional Manager also gets some advantages. I would like to know whether he will conduct some study about all policies taken in the month of March and also about the proportion of the lapsed polices so that you can have a correct picture. I think this kind of a thing should not be allowed. I would like to know whether the Government will examine this and take necessary corrective measures.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Q. No.

SHRI JAGESH DESAI: Madam, I want him to let us know. It is a very important question.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If he wants to assure, he can, but there is no question in it. Do you want to assure?

†[] Transliteration in Arabic Script.

SHRI ABRAR AHMAD: I will look into it.

* 3 The Question (Dr. Sanjay Sinh) was absent. For answer vide Cols. infra)

राष्ट्रीयकृत बैंकों की घाटे में चल रही शाखायें

*4. **श्री राम रतन राम:** क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) राष्ट्रीयकृत बैंकों की कितनी शाखायें घाटे में चल रही हैं;

(ख) क्या सरकार इन शाखाओं को बन्द करने के किसी प्रस्ताव पर विचार कर रही है;

(ग) यदि हां, तो इससे इन शाखाओं के कितने कर्मचारी प्रभावित होंगे; और

(घ) क्या सरकार इन कर्मचारियों को नौकरी से निकालने या उन्हें अन्य बैंकों में खपाने का विचार रखती है?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० अबरार अहमद): (क) से (घ) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एकत्र की गयी सूचना के अनुसार 31.3.93 की स्थिति के अनुसार राष्ट्रीयकृत बैंकों की घाटे में चल रही शाखाओं की संख्या 10,062 है।

(ख) भारतीय रिजर्व बैंक ने आगे सूचित किया है कि बैंकों की कुछ ऐसी शाखाएं भी हैं जो लम्बे अर्से से घाटे में चल रही हैं और सभी प्रयासों के बावजूद उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार की कोई सम्भावना नहीं है। इसलिये भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों को कहा है कि इनमें से कुछ शाखाओं को या तो "वसूली" शाखाओं में परिवर्तित कर दिया जाए या उन्हें बन्द कर दिया जाए। बन्द की जाने वाली शाखाओं की संख्या लगभग 100 होगी।

(ग) और (घ) इन शाखाओं के कर्मचारियों की संख्या के बारे में तत्काल जानकारी प्राप्त नहीं है। तथापि, किसी भी कर्मचारी की छंटनी किए जाने का कोई इरादा नहीं है क्योंकि ऐसे स्टाफ को आंतरिक लेखा-परीक्षा और वसूली कार्यों जैसी उत्पादक गतिविधियों में फिर से लगाया जाएगा।

श्री राम रतन राम: मंत्री महोदय ने जो अभी नेशनलाइज्ड बैंक की शाखाओं के घाटे में रहने की बात की है 10,062 है। इन्होंने बताया है कि 10,062 शाखाएं घाटे में चल रही है जिनमें से 100 बंद की जाने वाली है। मैं जानना चाहता हूं कि उनके घाटे में चलने के कारण क्या है यह स्पष्ट किया जाए और 1993-94 में कितने बैंक बंद होने जा रहे हैं, कितनी ब्रांचेज बंद होने जा रही है इसकी सूचना दी जाए?

डा० अबरार अहमद: मैडम मैंने माननीय सदस्य को मूल प्रा के उत्तर में राष्ट्रीयकृत बैंक की जो शाखाएं घाटे में चल रही हैं और जो 31 मार्च, 1993 के अनुसार हैं वह 10,062 बताई हैं। उनमें लगभग आर बी आई ने 102 शाखाएं बंद करने की सिफारिश की है। ये 102 वे शाखाएं हैं जो गत पांच वर्ष से लगातार घाटे में चल रही है लेकिन यह भी माननीय सदस्य को स्पष्ट कर देना चाहूंगा कि इन शाखाओं के बंद करने में आर बी आई ने साथ ही यह डायरेक्शन भी दी है कि कहीं भी रुरल बैंक के अलावा नेशनलाइज्ड बैंक की अगर एक ही शाखा किसी ग्रामीण क्षेत्र के अंदर है उसको बंद नहीं किया जायेगा। इसके साथ ही साथ कहीं अगर दो या दो से ज्यादा शाखाएं हैं वे घाटे में चल रही है उन दोनों को आपस में तालमेल करके एक ही शाखा को बंद किया जायेगा, दोनों शाखाओं को बंद नहीं किया जायेगा जिससे जो सर्विस रेंडर और लोगों की सुविधा की बात है उसको ध्यान में रखा जा सके।

जहां तक माननीय सदस्य ने ब्रांचेज के घाटे में चलने के बारे में पूछा है उसके काफी कारण है। लेकिन जो छोटी शाखाएं हैं जो खासतौर से घाटे में चल रही है इनमें आवरहैड का अधिक होना, खर्चे का ज्यादा होना, डिपोजिट्स का कम होना, रिकवरी का ठीक न होना, इसके प्रकार के कई कारण हैं जिसकी वजह से घाटे में चल रहे हैं। अभी बंद करने का निर्णय केवल दो शाखाओं का लिया है और बाकी 10,062 शाखाएं जो हैं उनके लिए प्रयास यह किया जा रहा है कि ये शाखाएं किसी प्रकार से प्रोफिट में आयें। बैंकिंग सेक्टर में रिफार्म किये गये हैं वह भी इसके अंदर मददगार हों यह हम चाहते हैं जिससे उन शाखाओं को बंद न करना पड़े।

श्री राम रतन राम: आवरहैड एक्सपेंडीचर की जो बात कही जा रही है जिस वक्त बैंक नेशनलाइज्ड किये गये थे और एल आई सी नेशनलाइज्ड की गई थी उस समय एल आई सी की केवल चार शाखाएं रखी गई थीं जबकि इंडिविजुअल बैंक नेशनलाइज्ड किये गये जिसकी वजह से आवरहैड एक्सपेंडीचर बहुत बढ़ गया अकेले